संजय उपाध्याय
अकादेमी पुरस्कारः नाट्य निर्देशन

SANJAY UPADHYAY
Akademi Award: Direction

Born on 12 January 1965 in Patna, Bihar, Shri Sanjay Upadhyay completed his postgraduation in English from Patna University. He earned his diploma from the National School of Drama in 1990 specializing in Direction. He has worked in Shri Ram Centre for Performing Arts, New Delhi as its director during 1994-96. He has been credited with shaping up the Madhya Pradesh School of Drama, Bhopal as its Founder Director (2010-2018). Shri Sanjay Upadhyay has been taking workshops and classes in institutional set up such as in NSD; Bhartendu Natya Academy; and in other institutions as a visiting faculty.

Shri Sanjay Upadhyay's initiation in theatre began as an actor in 1980 when he joined Patna IPTA, with which he remained actively associated till 1984. His foray into direction had begun in 1985 and his group Nirman Kala Manch, Patna, established in 1988, provided him a strong footing. Since then Shri Upadhyay has directed plays such as *Bidesia*, *Nal Damayanti*, *Kharia ka Ghera*, *Rustam Sohrab*, *Andhon ka Hathi*, *Andha Yug* among others for Nirman Kala Manch. Apart from many famous full-length productions, Shri Sanjay Upadhyay is known for his directorial work of biographical plays such as *Company Ustad*, based on Mahendra Misir's life and work; *Neelkanth Nirala*, based on Suryakant Tripathi Nirala's life and work; *Gagan Damama Bajyo* based on Bhagat Singh's life and work; *Kahan Gaye Mere Ugana*, based on the life of Vidyapati; *Heera Dom*, based on the life and work of poet Heera Dom; and *Gagan Ghata Gehrani* on the life and works of Kabir among others. He has also directed poetry on stage, such as *Saroj Smriti* by Suryakant Tripathi Nirala; *Bhagi Hui Ladkiyan* by Alok Dhanwa; and *Nadi Mein Aag* by Ravindra Bharti which have been well appreciated. In 1990, he established another group Safar Maina to work with the slum children of Patna. His penchant for music led him to create musical compositions for plays directed by him, and others such as *Godan* directed by Bhanu Bharti; *Khadia ka Ghera* directed by Robin Das; *Trishanku*, directed by B.M. Shah; *Brihanalla* directed by Ram Gopal Bajaj; *Chanakya Vishnugupta*, directed by Satya Dev Dubey; *Twelfth Night*, directed by Fritz Benewitz; *Khisiyani Billi*, directed by Barry John; and *Ratinath ki Chachi*, directed by Sharda Singh.

Shri Sanjay Upadhyay has been honoured with the Manohar Singh Memorial Award for 2010 by the National School of Drama, New Delhi.

Shri Sanjay Upadhyay receives the Sangeet Natak Akademi Award for the year 2018 for his contribution to Indian theatre as a director.

SANGEET NATAK AKADEMI AWARDS
संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार
2018

बिहार के पटना में 12 जनवरी 1965 को जन्मे श्री संजय उपाध्याय पटना विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में स्नातकोत्तर हैं। आपने निर्देशन में विशेषज्ञता के साथ वर्ष 1990 में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से डिप्लोमा अर्जित किया। 1994–96 तक श्री राम सेंटर फॉर परफॉर्मिंग आर्ट्स, नई दिल्ली के निदेशक रहे। संस्थापक निदेशक (2010–2018) के रूप में मध्य प्रदेश नाट्य विद्यालय, भोपाल को आकार देने का श्रेय भी आप ही को जाता है। आप राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय; भारतेंदु नाट्य अकादमी; और अन्यान्य संस्थानों में अतिथि संकाय के रूप में कार्यशालाओं और कक्षाओं का संचालन करते रहे हैं।

रंगमंच की दुनिया में श्री संजय उपाध्याय का पदार्पण सन् 1980 में पटना इप्टा के बैनर तले एक अभिनेता के रूप में हुआ, जिसके साथ आप सन् 1984 तक सक्रिय रूप से जुड़े रहे। निर्देशन की दुनिया में आपने अपना पहला कदम सन् 1985 में रखा और सन् 1988 में निर्माण कला मंच, पटना के नाम से रंगसमूह का गठन किया जिसकी बदौलत आपने रंगजगत में एक मजबूत मुकाम हासिल किया। तब से श्री उपाध्याय ने निर्माण कला मंच के लिए बिदेसिया, नल दमयंती, खड़िया का घेरा, रुस्तम सोहराब, अंधों का हाथी, अंधा युग जैसे नाटकों का निर्देशन किया है। कई प्रसिद्ध नाट्य प्रस्तुतियों के निर्माण के अतिरिक्त, श्री संजय उपाध्याय को जीवनीपरक नाटकों जैसे कि कम्पनी उस्ताद, महेंद्र मिसिर के जीवन और कार्य पर आधारित; नीलकंठ निराला, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के जीवन और कार्य पर आधारित; भगत सिंह के जीवन और कार्य पर आधारित गगन दमामा बाज्यो; विद्यापति के जीवन पर आधारित कहाँ गए मेरे उगना; हीरा डोम, कवि हीरा डोम के जीवन और कार्यों पर आधारित; और कबीर के जीवन और कार्यों पर आधारित गगन घटा गहरानी के निर्देशन के लिए भी जाना जाता है। आपने सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की सरोज स्मृति; आलोक धन्वा की भागी हुई लड़कियाँ; और रवीन्द्र भारती की नदी में आग जैसी कविताओं को भी मंच पर निर्देशित किया जो सराही भी गईं। 1990 में, आपने पटना के झुग्गी–झोपड़ी के बच्चों के साथ काम करने के लिए एक अन्य समूह सफर मैना की स्थापना की थी। संगीत के प्रति अपनी अनन्य रुचि से अभिप्रेत होकर आपने न केवल अपने नाटकों के लिए बल्कि अन्य निर्देशकों के लिए भी नाट्य संगीत रचे हैं, जिनमें भानु भारती द्वारा निर्देशित गोदान; रॉबिन दास द्वारा निर्देशित खड़िया का घेरा; बी. एम. शाह द्वारा निर्देशित त्रिशंकु; राम गोपाल बजाज द्वारा निर्देशित बृहनल्ला; सत्यदेव दुबे द्वारा निर्देशित चाणक्य विष्णुगुप्त; फ्रिट्ज बेनेविट्ज़ द्वारा निर्देशित ट्वेल्फ्थ नाइट; बैरी जॉन द्वारा निर्देशित खिसियानी बिल्ली; और

शारदा सिंह द्वारा निर्देशित रतिनाथ की चाची आदि प्रमुख हैं।

श्री संजय उपाध्याय को राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली द्वारा 2010 के मनोहर सिंह स्मृति पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

भारतीय रंगमंच के क्षेत्र में नाट्य निर्देशक के रूप में योगदान के लिए श्री संजय उपाध्याय को वर्ष 2018 के संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

SANGEET NATAK AKADEMI AWARDS
संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार
2018